Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2022 3(1), 867–872

MUSLIM WOMEN IN THE CURRENT SCENARIO: A BRIEF STUDY

बर्तमान परिदृश्य में मुस्लिम महिला: एक संक्षिप्त अध्ययन

Shabana Anjum [1]

[1] Department of History, Purnia University, Bihar

DOI
10.29121/shodhkosh.v3.i1.2022.4559

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: In this age of information technology, which has turned our world into a global village, it is pertinent to question what impact this recent development has had on the rights of Muslim women across the world. Having travelled to nine Muslim countries, from Pakistan and Bangladesh to the Gulf countries, Egypt, Syria and Lebanon, my answer would be that it is slowly, but surely, leading to reassessment and change. However, attempts to accelerate the pace of this change, without fully understanding its complex nature and without taking into account the deep commitment of most Muslim women to their spiritual and cultural authenticity, may halt or even reverse this process, which could be very costly for women and Muslim societies in particular. So, these are the challenges and opportunities.

Hindi: इस सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, जिसने हमारे विश्व को एक वैश्विक गांव में बदल दिया है, यह सवाल उठाना उचित है कि इस हाल की विकास ने दुनियाभर में मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों पर क्या असर डाला है। पाकिस्तान और बांगलादेश से लेकर खाड़ी देशों, मिस्र, सीरिया और लेबनान तक नौ मुस्लिम देशों की यात्रा करने के बाद, मेरा जवाब होगा कि यह धीरे-धीरे, लेकिन निश्चित रूप से, पुनर्मूल्यांकन और बदलाव की ओर अग्रसर हो रहा है। हालांकि, इस बदलाव की गति को तेज करने के प्रयास, बिना इसके जटिल स्वरूप को पूरी तरह से समझे और अधिकांश मुस्लिम महिलाओं की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रामाणिकता के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को ध्यान में रखे बिना, इस प्रक्रिया को रोक सकते हैं या उलट भी सकते हैं, जो महिलाओं और विशेष रूप से मुस्लिम समाजों के लिए बहुत महंगा हो सकता है। इसलिए, ये चुनौतियाँ और अवसर हैं।

1. प्रस्तावना

धार्मिक मुस्लिम महिलाएं आमतौर पर अपने समाजों के कानूनों और न्यायिक प्रणालियों से भ्रमित होती हैं, जिन्हें इस्लामी माना जाता है। यह अच्छी तरह से समझा जाता है कि इस्लाम की पहचान न्याय है। फिर भी मुस्लिम समाजों ने महिलाओं के साथ इस्लाम के नाम पर अन्याय किया है। कुछ महिलाएं जो इस्लामी अदालतों में तलाक की मांग करती हैं, उन्हें सालों तक इस व्यवस्था में फंसा दिया जाता है। दूसरी ओर, पुरुषों के लिए तलाक और पुनर्विवाह बहुत आसान कर दिया गया है। इसके अलावा, शादी में असंतोष, तलाक या पालन-पोषण के मामले में महिलाओं के लिए शरियत (इस्लामी कानून) द्वारा दी गई विभिन्न सुरक्षा व्यवस्थाएं, यहां तक कि महिलाओं के अपने परिवारों द्वारा भी अनदेखी की जाती हैं। जबकि पश्चिमी नारीवादी ऐसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जैसे कि घूंघट और वारिसी कानूनों में लिंग आधारित भेदभाव, मुस्लिम महिलाएं इस्लामी सिद्धांतों की अधिक न्यायपूर्ण समझ और पालन की चाहती हैं। वे यह मानती हैं कि वर्तमान कानून और प्रथाएं सुखी पारिवारिक जीवन या न्यायपूर्ण समाज के लिए उपयुक्त नहीं हैं। आश्चर्य की बात है कि मुस्लिम महिलाओं को कई मुस्लिम पुरुष न्यायविदों का समर्थन भी मिल रहा है, जो उनकी चिंताओं को साझा करते हैं। कई कारणों ने मुस्लिमों को वर्तमान स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए मजबूर किया है। उपनिवेशीकरण का अनुभव, युद्ध, पश्चिमी शिक्षा और पश्चिमी संचार के तरीके इन कारकों में प्रमुख हैं। उपनिवेशीकरण ने स्वदेशी शासन प्रणालियों की कमजोरियों को उजागर किया, जबकि साथ ही मुस्लिम व्यक्तियों के धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों को चुनौती दी और हाशिए पर डाल दिया। युद्धों ने स्थापित सामाजिक संरचनाओं को नष्ट किया, विशेष रूप से परिवार से संबंधित संरचनाओं को।

अंततः, पश्चिमी शिक्षा और संचार के तरीकों जैसे उपग्रह टेलीविजन और इंटरनेट के माध्यम से, मुस्लिम पुरुष और महिलाएं तुरंत, हालांकि अप्रत्यक्ष रूप से, उपनिवेशोत्तर पश्चिमी दृष्टिकोण और पश्चिमी जीवन के तरीके का अनुभव कर रहे हैं। सामान्यतः, वे जो कुछ देखते हैं, जैसे लोकतांत्रिक शासन, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, स्वतंत्र महिलाएं, और आरामदायक, तकनीकी रूप से उन्नत समाज, उसे पसंद करते हैं। हालांकि, कुछ ऐसी चीजें भी हैं जिन्हें वे बिल्कुल पसंद नहीं करते, जैसे यौन स्वतंत्रता, बढ़ता हुआ तलाक दर, समाज में बढ़ती हिंसा, विशेष रूप से युवाओं के बीच, और वृद्धों के साथ व्यवहार। इस प्रकार, आज कई मुस्लिम, पुरुष और महिलाएं, निम्नलिखित सवालों से जूझ रहे हैं: वे अपने समाजों में प्रगति कैसे लाएं, जबकि साथ ही अपने गहरे आध्यात्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक पहचान की रक्षा करें, जो उपनिवेशवाद ने नष्ट करने में असफल प्रयास किए थे? वे पश्चिमी अनुभव से कैसे लाभ उठा सकते हैं, जिसमें महिलाओं के वैध अधिकारों की स्वीकृति शामिल है, बिना अनजाने में अपने अत्यधिक मूल्यवान पारिवारिक संबंधों को नष्ट किए? इस संदर्भ में, उन उत्तरी अमेरिकी मुसलमानों का अनुभव, जिन्होंने अपने धार्मिक विश्वासों और जातीय धरोहर को अमेरिकी और कनाडाई जीवनशैली के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत किया है, बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह इस तथ्य का जीवित प्रमाण है कि इस्लाम केवल एक "ओरिएंटल" धर्म नहीं है, बल्कि एक वैश्विक धर्म है जो सभी ऐतिहासिक कालों और सभी भौगोलिक स्थानों में मुसलमानों की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है।

2. वैश्विक गांव में स्थिति

ग्लोबल विलेज में मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों पर चर्चा शुरू करना एक उत्तरी अमेरिकी मुस्लिम दृष्टिकोण प्रदान करते हुए न तो अप्रासंगिक है और न ही महत्वहीन। वास्तव में, विभिन्न मुस्लिम देशों में मेरी दर्शकों ने मेरी दृष्टिकोण में गहरी रुचि दिखाई। एक बार जब उन्होंने मेरे गंभीर आध्यात्मिक प्रतिबद्धता और इस विषय पर न्यायिक ज्ञान को पहचाना, तो उन्होंने इस्लाम में महिलाओं के अधिकारों के बारे में और जानकारी प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। हालांकि, जब एक उत्तरी अमेरिकी मुस्लिम बोलता है, तो एक नुकसान होता है। जबकि गैर-अमेरिकी मुस्लिम महिलाएं और पुरुष मेरे न्यायिक दृष्टिकोण को पसंद कर सकते हैं और उनका स्वागत कर सकते हैं, कुछ उन्हें केवल उत्तरी अमेरिकी मुस्लिम महिलाओं की परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मान सकते हैं। दूसरी ओर, कुछ लोग उन्हें प्रोत्साहित हो सकते हैं, शायद यह मानते हुए कि यह उनके समाज को व्यवस्थित करने का एक नया तरीका है, जो उनकी संस्कृति के कुछ पुराने पहलुओं से टकरा सकता है, लेकिन उनके धार्मिक विश्वासों से नहीं। ऐसे दृष्टिकोण मुस्लिम दुनिया में बदलाव का एक आधार प्रदान कर सकते हैं। इस दूसरे समूह के हित में, और अमेरिकी और कनाडाई मुस्लिमों के हित में, जिन्होंने बार-बार मुझसे मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के बारे में पूछा है, मैं इस लेख में उन महिलाओं के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करूंगा जो मुस्लिम समुदाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। मेरे निष्कर्षों को खींचते समय, मैं मुख्य रूप से बुनियादी और पारंपरिक इस्लामी स्रोतों पर निर्भर करूंगा, ताकि यह दिखा सकूं कि समस्याग्रस्त न्यायशास्त्र अक्सर कुरान के पाठ को गलत समझने या गलत तरीके से लागू करने का परिणाम था, जो सांस्कृतिक विकृतियों या पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रह से उत्पन्न हुआ था। इस चर्चा की तैयारी के लिए, हमें पहले इस्लामी न्यायशास्त्र और इसके संस्कृति से संबंध को समझने की नींव रखनी होगी। संस्कृति और धर्म के बीच का अंतर (और उनका संबंध) इस्लामी न्यायशास्त्र को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि कुरान भगवान का प्रकट किया हुआ शब्द है, जबकि संस्कृति मानव का निर्माण है। इसलिए, जबकि एक मुस्लिम कुरान के हर शब्द, वाक्य और वाक्यांश से बंधा होता है, वह अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं से उसी तरह से बंधा नहीं होता।

उदाहरण के लिए, एक मुस्लिम एक विशेष सांस्कृतिक रिवाज या मूल्य को नकार सकता है, फिर भी उस संस्कृति का हिस्सा बना रह सकता है। हालांकि, वह कुरान के एक भी शब्द को नकार नहीं सकती और फिर भी खुद को मुस्लिम कह सकती है। यह मुसलमानों के लिए उतना ही सरल और स्पष्ट है। इसके परिणामस्वरूप, सांस्कृतिक धारणाएं और मूल्य जो धार्मिक रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, वे मुसलमानों को यह विश्वास दिलाने में धोखाधड़ी कर सकते हैं कि उनका धार्मिक स्रोत है, इस प्रकार मुसलमानों को उन्हें आलोचनात्मक रूप से मूल्यांकन करने या यहां तक कि उन्हें अस्वीकार करने का अधिकार नहीं मिलता। कुछ प्रमुख धोखाधड़ी सांस्कृतिक धारणाएं लोकतंत्र और महिलाओं के अधिकारों से संबंधित हैं। दोनों मुद्दे अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। सांस्कृतिक धारणाएं और रिवाजों को इस्लामी कानूनी व्यवस्था में अक्सर वैध रूप से शामिल किया गया है। कुरान जातीय, नस्लीय और अन्य विविधताओं का सम्मान करता है; और हदीथ (नबी के कथन) सभी मानवों की समानता को महत्व देती है। इसलिए, न्यायविदों ने विभिन्न संस्कृतियों को उनके सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया है, ताकि उनके रिवाजों को कानूनी प्रणालियों में शामिल किया जा सके। ऐसी समावेशिता की एकमात्र शर्त यह थी कि ये रिवाज इस्लाम के बुनियादी सिद्धांतों के अनुरूप होने चाहिए। अगर कोई असंगति हो, तो सांस्कृतिक रिवाजों को अस्वीकार करना आवश्यक था। यह दृष्टिकोण इस्लामी सभ्यताओं के विकास की अनुमति देता था, प्रत्येक के पास अपनी सांस्कृतिक धरोहर थी, लेकिन सभी एक ही बुनियादी धार्मिक कानून साझा करते थे। दुर्भाग्यवश, हालांकि, कुछ रिवाज जो इस्लामी सिद्धांतों के साथ संघर्ष करते थे, वे धीरे-धीरे विभिन्न मुस्लिम देशों के कानूनों में घुस आए। आज भी, कई देश जो इस्लामी कानून का पालन करने का दावा करते हैं, अक्सर धर्म का उपयोग ऐसे घृणित कानूनों को सही ठहराने के लिए करते हैं जो वास्तव में रिवाजों पर आधारित होते हैं। चूंकि ऐसे औचित्य मुस्लिम समाजों में पेश किए जाते हैं, जिनकी धार्मिक शिक्षा पिछले एक शताब्दी में शायद ही प्रभावित हुई हो, मुसलमान अक्सर आपत्तिजनक कानूनों की सांस्कृतिक जड़ों और उनके इस्लाम से संघर्ष को पहचानने में असमर्थ होते हैं।

इसके परिणामस्वरूप, भक्त मुसलमान किसी भी कानून के हिस्से की आलोचना करने में संकोच करते हैं। दूसरे शब्दों में, कुछ कानूनों के धार्मिक चरित्र के बारे में भ्रम ने महत्वपूर्ण आलोचनात्मक आवाजों को चुप कर दिया है और समाज को घृणित रिवाजों से बांध कर रखा है, जो धार्मिक आदेशों के रूप में गलत समझे जाते हैं। यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि इस्लामी कानून जो मु'आमलात (लोगों के बीच संबंध) से संबंधित होते हैं, अक्सर प्रमुख मुस्लिम विद्वानों के बीच न्यायशास्त्रिक दृष्टिकोण में भिन्नताएं दिखाते हैं। इन भिन्नताओं की कई जड़ें हैं। कानून में रिवाज को शामिल करना केवल एक कारण है। एक और कारण वह है जो कुरान में खुद स्वतंत्रता की स्वतंत्रता की गारंटी देता है। इसलिए, पारंपरिक इस्लामी न्यायशास्त्र में यह स्थापित है कि विद्वानों को अपने इज्तिहाद (न्यायशास्त्रिक व्याख्या) में संलग्न होने का अधिकार है ताकि वे ऐसे कानून विकसित कर सकें जो उनके क्षेत्र और काल के लिए सबसे उपयुक्त हों। दुर्भाग्यवश, कई कारणों से इज्तिहाद की सीमाएं संकुचित हो गई हैं और विचार की स्वतंत्रता को सीमित किया गया है। इसके परिणामस्वरूप, कई विचारधाराएं गायब हो गईं और कोई नई नहीं आई। इतिहास में कई ऐसे उदाहरण मिले हैं जब मुस्लिम विद्वान अपने राजनीतिक शासकों के विचारों से असहमत रहे, और ऐसे विद्वानों को यातनाएं दी गईं या जेल में डाला गया। यह स्थिति आज भी जारी है, जो इन देशों में विचार या विश्वास की स्वतंत्रता के लिए अच्छी बात नहीं है। मुस्लिम महिलाएं अपने अधिकारों पर चर्चा कैसे शुरू कर सकती हैं जब मुस्लिम पुरुष और महिलाएं खुले तौर पर बात भी नहीं कर सकते?

3. कुरानिक दृष्टिकोण

कुरान महिला को संपत्ति जमा करने के अतिरिक्त अवसर भी प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, विवाह के समय, महिला को अपने पति से उपहार प्राप्त करने का अधिकार होता है, जो कि कुरान के कुछ आयतों (यदि वह पहले से न जानती हो) से लेकर कुछ चांदी के सिक्कों या एक बड़ी संपत्ति तक हो सकता है, जो दोनों पक्षों के आपसी समझौते पर निर्भर करता है। इसे महिला का सादक या महर कहा जाता है, जिसे कभी-कभी "दुल्हन की कीमत" के रूप में गलत तरीके से वर्णित किया जाता है। सादक यह दर्शाता है कि पुरुष विवाह की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए तैयार है। महिला के पास यह विकल्प होता है कि वह सादक (या निर्धारित संपत्ति) की पूरी राशि को पहले ही ले, या उसका कुछ हिस्सा भविष्य में निर्धारित समय पर या मृत्यु या तलाक जैसी घटनाओं के बाद लिया जाए। मृत्यु की स्थिति में, सादक मृतक पति की संपत्ति का प्राथमिक ऋण बन जाता है, जिसे अन्य सभी ऋणों से पहले चुकता किया जाता है। इसलिए, कभी-कभी सादक पत्नी की संपत्ति से ज्यादा मूल्यवान होता है, जब संपत्ति कर्ज में डूबी हो। तलाक की स्थिति में, सादक महिला को एक स्पष्ट रूप से परिभाषित संपत्ति या धन प्रदान करता है, जिस पर वह तलाक के बाद निर्भर कर सकती है, बिना किसी और बातचीत की आवश्यकता के। जबकि कुछ अमीर महिलाएं प्रतीकात्मक सादक को स्वीकार करती हैं, कई महिलाएं इसे मृत्यु या तलाक की स्थिति में अपनी सुरक्षा के रूप में देखती हैं। कुछ महिलाएं शुरुआत में पूरी सादक राशि लेना पसंद करती हैं। ऐसी स्थिति में, ये महिलाएं सादक की राशि को किसी भी उद्यम में निवेश करने के लिए स्वतंत्र होती हैं। वे इसके साथ व्यवसाय शुरू कर सकती हैं या इसे दान में दे सकती हैं। पति इसका या उससे होने वाले लाभ को नहीं छू सकता। बेशक, मुस्लिम देशों में पितृसत्तात्मक वास्तविकता इस्लामी सिद्धांत से बिल्कुल अलग है। आजकल, कई पिता अपनी बेटियों के लिए सादक की राशि या प्रकार पर बातचीत करते हैं। कुछ संस्कृतियों में, यह परिवार के लिए प्रतिष्ठा का प्रतीक होता है कि वे बेटी के वित्तीय हितों की परवाह किए बिना प्रतीकात्मक सादक को स्वीकार करें। इन मामलों में, कई पिता अपनी बेटियों के हितों की उचित रक्षा नहीं करते।

अन्य संस्कृतियों में, जहां बड़ी सादक की राशि तय होती है, पिता इसे अपनी बेटी से शादी के खर्चों को कवर करने के लिए ले लेते हैं (जो परंपरागत रूप से उनकी जिम्मेदारी होती है)। अगर वह ऐसा नहीं करता, तो पति शादी के बाद इसे पत्नी से "उधार" ले सकता है। आमतौर पर, कुछ संस्कृतियां पत्नी पर यह दबाव डालती हैं कि वह अपने सादक के स्थगित हिस्से को पूरी तरह से छोड़ दे, ताकि वह पति के प्रति अच्छा व्यवहार दिखा सके। इन सभी संस्कृतियों में, महिला वित्तीय रूप से अत्यधिक कमजोर हो जाती है और अपनी ईश्वर प्रदत्त स्वतंत्रता का एक अच्छा हिस्सा खो देती है। हालांकि, मुस्लिम महिला के पास संपत्ति जमा करने के अन्य तरीके भी हैं। उदाहरण के लिए, वह काम कर सकती है। कुरान कहता है कि पुरुष और महिला दोनों को अपनी कमाई का अधिकार है। खदीजा, जो पैगंबर की पहली पत्नी थीं, एक व्यापारी महिला थीं और आज भी मुस्लिम महिलाओं के लिए एक उच्च आदर्श के रूप में मानी जाती हैं। फिर भी, हाल ही तक पितृसत्तात्मक कानूनों ने महिलाओं को काम करने से रोक दिया था, यह बहाना बनाकर कि महिलाएं अपनी शारीरिक सीमाओं के कारण काम करने के लिए उपयुक्त नहीं हैं या उनके नैतिकता की रक्षा के नाम पर। हालांकि, अब नई आर्थिक वास्तविकताएं आ चुकी हैं, और अब कई मुस्लिम देशों के व्यक्तिगत स्थिति कोड महिलाओं को काम करने से रोकते नहीं हैं। एक और संपत्ति का स्रोत जो मुस्लिम महिला के पास है, वह है उसका विरासत। इस्लाम महिला को अपने रिश्तेदारों की विरासत में एक हिस्सा देने की गारंटी देता है, जो मृतक से उसकी रिश्तेदारी की डिग्री पर आधारित होता है। पश्चिम में यह गलत धारणा है कि इस्लाम एक महिला को विरासत में मिलने वाला हिस्सा पुरुष के हिस्से का आधा देता है।

कुरान यह स्पष्ट करता है कि एक बहन अपने भाई द्वारा प्राप्त राशि का आधा हिस्सा प्राप्त करती है, लेकिन यह भी निर्दिष्ट करता है कि अन्य महिला रिश्तेदार, जिनकी रिश्तेदारी की डिग्री अलग होती है, वे अन्य पुरुषों से अधिक विरासत प्राप्त कर सकती हैं। फिर भी, कुरान की विशिष्टता के बावजूद, ऐसा प्रतीत होता है कि भाई अपनी बहन से दोगुना हिस्सा प्राप्त करता है, लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। बहन द्वारा प्राप्त राशि उसकी संपत्ति में एक शुद्ध वृद्धि होती है। भाई द्वारा प्राप्त राशि एक सकल राशि होती है, जिसमें से उसे अपने परिवार की विभिन्न महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों का पालन-पोषण करने के खर्चों को घटाना होता है, जिनमें से एक वह बहन भी हो सकती है। जैसा कि पहले कहा गया था, भले ही बहन धनी हो, उसे अपनी देखभाल का जिम्मा खुद नहीं उठाना होता। उसका सबसे करीबी पुरुष रिश्तेदार उस जिम्मेदारी का पालन करता है, जिसे वह केवल तभी छोड़

सकती है जब वह चाहें। इसलिए, भाई की संपत्ति में होने वाली शुद्ध वृद्धि अक्सर अपनी बहन की तुलना में कम होती है। ये तथ्य यह दर्शाते हैं कि मुस्लिम विद्वान पहले से जानते थे कि इस्लाम में विरासत कानून काफी जटिल हैं और इन्हें एक सामान्य नारे में संकुचित नहीं किया जा सकता। फिर भी, पितृसत्तात्मकता ने विरासत चित्र को बहुत सरल बना दिया है। कई मुस्लिम महिलाएं अपनी विरासत में कोई हिस्सा नहीं पातीं। कुछ को उनके परिवारों द्वारा अपनी विरासत भाइयों को सौंपने के लिए मजबूर किया जाता है। इससे भी बुरी बात यह है कि कई भाई अपनी बहनों से विरासत लेकर उनके जीवन से गायब हो जाते हैं, जिनके पास उनकी देखभाल करने के लिए कोई करीबी पुरुष रिश्तेदार नहीं होता। ऐतिहासिक रूप से, मुस्लिम न्यायालयों ने इस व्यवहार को अपराध माना और भाई को अपनी बहन की देखभाल करने के लिए मजबूर किया। आजकल, कई अन्याय अनदेखे रह जाते हैं, और मुस्लिम परिवारों में अधिकारों और जिम्मेदारियों का संतुलन गंभीर रूप से बिगड़ चुका है।

4. लिंग आधारित दृष्टिकोण

कुरान स्पष्ट रूप से और बार-बार कहता है कि सभी इंसान एक ही नफ्स से पैदा हुए हैं। इसके अतिरिक्त, कुरान यह भी कहता है कि भगवान ने हमारे लिए हमारे ही नफ्स से साथी बनाए हैं, जिनके साथ हम शांति पा सकते हैं। कुरान में विवाहिक संबंध को शांति, दया और स्नेह से परिभाषित किया गया है। वास्तव में, पति और पत्नी एक-दूसरे के "कपड़े" हैं, अर्थात वे एक-दूसरे की गोपनीयता की रक्षा करते हैं और एक-दूसरे की कमजोरियों को छिपाते हैं। इस दृष्टिकोण के कई क्षेत्रीय लिंग संबंधों पर महत्वपूर्ण प्रभाव हैं, जिन्हें नीचे संक्षेप में बताया जाएगा। फिर भी, यह अक्सर कहा जाता है कि कुरान में पुरुषों की महिलाओं पर श्रेष्ठता का उल्लेख किया गया है। इस तर्क में मुख्य आयत वह है जिसमें पुरुषों को महिलाओं पर "क़व्वामुन" कहा गया है। "क़व्वामुन" शब्द एक जटिल पुराना शब्द है, जिसका कई अर्थ हैं। इस आयत का एक अनुवाद कहता है: "पुरुष महिलाओं के संरक्षक और देखरेख करने वाले हैं, क्योंकि भगवान ने एक को दूसरे से अधिक (शक्ति) दी है, और क्योंकि वे अपनी संपत्ति से उनका समर्थन करते हैं।" "क़व्वामुन" शब्द का अनुवाद "संरक्षक और देखरेख करने वाले" के रूप में किया गया है, लेकिन पारंपरिक पितृसत्तात्मक व्याख्याकारों (और औसत मुस्लिम पुरुष) ने "क़व्वामुन" को पुरुषों की महिलाओं पर श्रेष्ठता से जोड़ा (अधिकतर शारीरिक शक्ति के कारण, जैसा कि ऊपर के अनुवाद में सुझाया गया है)। हालांकि, प्राचीन अरबी शब्दकोशों में "क़व्वामुन" के अर्थों में मार्गदर्शन और सलाह देना भी शामिल है। ये अर्थ पुरुष विद्वानों द्वारा पसंद किए गए अर्थों की तुलना में लिंग संबंधों पर कुरान के सामान्य दृष्टिकोण के साथ अधिक संगत हैं। सही तरीके से अनुवादित, यह आयत केवल तब पुरुष के क़वामत को स्वीकार करती है जब वह (1) महिला का आर्थिक रूप से समर्थन कर रहा हो, और (2) वह कुछ विशेष पहलुओं में महिला से ऊपर हो जो उस समय उसके लिए महत्वपूर्ण हो, और जिसमें वह सलाह और मार्गदर्शन प्रदान कर रहा हो। (दूसरे आवश्यकताएँ उदाहरण स्वरूप व्यापारिक समझ, यदि उस समय महिला खुद एक जानकार व्यापारी नहीं है, या शारीरिक ताकत, यदि उस विशेष महिला को उस समय शारीरिक मदद की आवश्यकता हो, आदि)।

अन्यथा, पुरुष अपनी क़वामत को, चाहे वह सलाह देने वाला हो या न हो, लागू नहीं कर सकता। फिर भी, वही एक आयत पितृसत्तात्मक पक्षपाती दृष्टिकोण का प्रतीक बन गई है, क्योंकि इसे इस तरह से समझा गया है कि सभी पुरुष सभी महिलाओं से हर समय श्रेष्ठ होते हैं। जैसा कि कुछ विद्वानों ने समझाया है, पुरुष हमेशा महिलाओं के मुकाबले शारीरिक ताकत के कारण अधिक सुलभ स्थिति में होते हैं। इस दृष्टिकोण ने पुरुषों को इस्लामी आदर्श विवाहिक संबंधों से दूर करने के लिए प्रेरित किया। कुरान के विवाहिक दृष्टिकोण के कारण, विद्वानों ने विवाह समझौते को एक साथी के रूप में देखा न कि एक सेवा समझौते के रूप में। इसके परिणामस्वरूप, उन्होंने कहा कि महिला को घर की सफाई, खाना पकाना या सेवा करने की आवश्यकता नहीं है। यदि वह यह काम करती है, तो वह एक स्वयंसेवक मानी जाती है। अन्यथा, पति को उसे तैयार भोजन लाकर देना और घर की देखभाल करना अनिवार्य है। हालांकि, इन तथ्यों के बावजूद, आजकल कई इस्लामी संस्कृतियों में घर को पत्नी का क्षेत्र माना जाता है, और उसे इसका ध्यान रखने और बच्चों को पालने की जिम्मेदारी दी जाती है। वास्तव में, मोरक्को के व्यक्तिगत स्थिति संहिता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पत्नी का कर्तव्य "घर का प्रबंधन" करना है। कई परिवारों में इसका मतलब है कि पत्नी को कानूनी रूप से घर का काम करना पड़ता है क्योंकि वह घरेलू मदद का खर्च नहीं उठा सकती। यह उपर्युक्त न्यायिक दृष्टिकोण के खिलाफ है। कुरान गर्भावस्था को एक कठिन अनुभव के रूप में देखता है। शायद इसी कारण से, मुस्लिम धर्मशास्त्री मां को बच्चे को दूध पिलाने की जिम्मेदारी नहीं देते, सिवाय इसके कि यह अंतिम विकल्प हो। बच्चे दोनों माता-पिता द्वारा पाले जाते हैं, जो एक-दूसरे से महत्वपूर्ण मामलों पर परामर्श करते हैं। यह तथ्य, बेशक, कुरान के आदर्श विवाहिक संबंधों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। इस दृष्टिकोण के बावजूद, आज के मुस्लिम समाजों में मुस्लिम महिलाओं को सामाजिक दबाव, अगर कानूनी नहीं, तो अपने बच्चों को दूध पिलाने और प्रमुख देखभालकर्ता होने की जिम्मेदारी दी जाती है। यह जिम्मेदारी न केवल परंपरा के खिलाफ है, बल्कि यह अक्सर माताओं के मानव विकास को प्रभावित करती है, विशेष रूप से शिक्षा और करियर के संदर्भ में। फिर भी, कई पुरुष यह तर्क देते हैं कि मां का दूध विशेष स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है और प्रारंभिक वर्षों में उसकी देखभाल बच्चे की मानसिक स्थिति के लिए महत्वपूर्ण है।

यहां तक कि यदि यह सच है, तो यह स्पष्ट नहीं है कि नर्स या देखभालकर्ता को मां ही होना चाहिए। एक दूध पिलाने वाली नौकरानी समान लाभ प्रदान करेगी। बहुत से देशों में नर्सें उपलब्ध हैं, लेकिन सामाजिक दबावों के कारण उनका उपयोग कम होता है। हालांकि, पैगंबर खुद एक नर्स से दूध पिए थे। इसके अतिरिक्त, मक्का के संपन्न परिवारों की परंपरा थी कि वे अपने बच्चों को कुछ सालों के लिए रेगिस्तान में भेजते थे ताकि वे बेहतर अरबी सीख सकें और साफ हवा में सांस ले सकें। पैगंबर को भी मक्का से रेगिस्तान में अपनी नर्स के पास भेजा गया था। उन्होंने उस परंपरा की कभी आलोचना नहीं की और वास्तव में उन्हें वह महिला बहुत प्रिय थी, जिन्होंने उनका पालन-पोषण किया। यह सब तथ्य यह साबित करते हैं कि मुस्लिम समाजों में

समस्या इस्लाम नहीं है, बल्कि वर्तमान सांस्कृतिक प्रथाएं हैं। इन संस्कृतियों में कई बार जहिलीयत (इस्लाम से पहले की) मान्यताएं, जिन्हें इस्लाम ने निषेध किया है, अब भी कायम हैं। सबसे अच्छा उदाहरण यह है कि विवाह संबंधी जातीय और नस्लीय भेदभाव को लेकर कई विचारधाराएँ अब भी जोर पकड़ती हैं। कुरान न केवल यह सिखाता है कि सभी इंसान एक ही नफ्स से पैदा हुए हैं, बल्कि यह भी बताता है कि मानव जाति की जातीय और नस्लीय भिन्नताएं भगवान ने जानबूझकर बनाई हैं ताकि हम एक-दूसरे को जान सकें। कुरान यह भी कहता है कि भगवान की नजर में वे लोग सबसे निकट हैं जो सबसे अधिक परहेज़गार हैं। इसके अलावा, भगवान हमें केवल हमारे पiety (धार्मिक निष्ठा) के आधार पर आंकते हैं, न कि हमारे त्वचा के रंग के आधार पर। फिर भी, कुछ विचारधाराएं अब भी यह मांग करती हैं कि संभावित पति पत्नी के समान जातीय पृष्ठभूमि और सामाजिक स्थिति का होना चाहिए, और उसका पेशा, आर्थिक स्थिति और वंशावली भी उसी के अनुरूप होना चाहिए, अन्यथा पिता विवाह को रोक सकता है या रद्द कर सकता है।

5. परिवर्तन के दर्शन के साथ निष्कर्ष

कुरान की क्रमिक परिवर्तन की दर्शन इस तथ्य पर आधारित है कि मानव चेतना में मौलिक परिवर्तन आमतौर पर रातों-रात नहीं होते। इसके बजाय, यह व्यक्तिगत या सामाजिक परिपक्वता की अवधि की आवश्यकता होती है। इस कारण से, कुरान जड़ पकड़े हुए रिवाजों, विश्वासों और प्रथाओं में परिवर्तन लाने के लिए क्रमिक दृष्टिकोण अपनाता है, सिवाय उन मौलिक मुद्दों के, जैसे कि भगवान की एकता और मुहम्मद की नबूवत पर विश्वास। स्पष्ट रूप से, इन मौलिक विश्वासों के बिना, कुरान का संदेश अपनी उचित दिव्य शक्ति नहीं रखता। कुरान उन व्यवहारों को सख्ती से निषेध करता है जो मौलिक नैतिक सिद्धांतों के खिलाफ हैं। उदाहरण के लिए, यह हत्या, और विशेष रूप से कन्या भ्रूण हत्या को निषेध करता है। क्रमिक परिवर्तन की यह दर्शन कम महत्वपूर्ण, लेकिन काफी महत्वपूर्ण मामलों में लागू की गई थी। सबसे प्रसिद्ध उदाहरण शराब पीने पर प्रतिबंध है, क्योंकि यह समाज शराब पीने का आदी था; यह धीरे-धीरे लागू किया गया। एक कम ज्ञात उदाहरण संविधानिक कानून के क्षेत्र से आता है। कुरान ने कुछ आयतों में केवल इस्लामी राज्य की मौलिक संविधानिक विशेषताओं का उल्लेख किया, जैसे कि बै'अह (वोटिंग) और शूरा (परामर्श)। यह इस्लामी समाजों पर निर्भर छोड़ दिया गया था कि वे इस मौलिक संविधानिक ढांचे को अपने सामाजिक चेतना और राजनीतिक एवं संविधानिक परिपक्वता के विभिन्न स्तरों के अनुसार विस्तार से विकसित करें। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न परिणाम मुस्लिम दुनिया में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। लेकिन कुरान ने केवल समाज में चेतना और विकास के स्तरों में भिन्नताओं को नहीं पहचाना, बल्कि उसने व्यक्तिगत भिन्नताओं को भी पहचाना। इस कारण से, इसका क्रमिक परिवर्तन का दर्शन व्यक्तियों पर भी लागू हुआ। यह सबसे स्पष्ट रूप से नैतिकता के क्षेत्र में दिखाई देता है।

कुरान विभिन्न क्रियाओं और शब्दों को "अच्छा" और "बेहतर" के रूप में वर्णित करता है। यह दृष्टिकोण इस बात को पहचानता है कि सभी इंसान एक ही समझ या व्यवहार करने में सक्षम नहीं होते। उदाहरण के लिए, आपराधिक कानून के क्षेत्र में, कुछ मुस्लिम यह आग्रह कर सकते हैं कि "आँख के बदले आँख" के नियम के तहत अपराधी को सजा दी जानी चाहिए। कुरान वास्तव में इस न्याय के मानक को प्रस्तुत करता है। लेकिन, यह बार-बार यह कहता है कि माफ करना बेहतर है, और पूछता है: "हम इंसान आखिर क्यों उम्मीद कर सकते हैं कि हमें अगले जीवन में माफी मिले, जब हम इस जीवन में इतने कट्टर और बदले की भावना वाले हैं?" दूसरे शब्दों में, कोई यह कह सकता है कि उसे अपराधी को सजा देने का अधिकार है, लेकिन यह बेहतर है कि इस सोच से ऊपर उठकर, यदि संभव हो, तो माफ कर दिया जाए। स्पष्ट रूप से, अच्छे मुसलमान होने के विभिन्न स्तर होते हैं; जिनमें से कुछ अन्य से बेहतर होते हैं। बेहतर मुसलमानों को उच्च चेतना, गहरी नैतिक समझ और मानव दुर्बलताओं के प्रति अधिक सहिष्णुता की आवश्यकता होती है। महिलाओं और अन्य समूहों के पितृसत्तात्मक उत्पीड़न को संबोधित करते हुए, कुरान समाज और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर परिवर्तन के लिए क्रमिक दृष्टिकोण अपनाता है। कुरान और पैगंबर ने बार-बार दासों और महिलाओं का उल्लेख किया, मुसलमानों को उन्हें अच्छा व्यवहार करने की सलाह दी। अपने आखिरी भाषण, ख़ुतबात अल-वदा में, पैगंबर ने महिलाओं की स्थिति को निहत्थे दासों की स्थिति के समान बताया, और पुरुषों से आग्रह किया कि वे उनके साथ अच्छा व्यवहार करें।

दुर्भाग्यवश, अपने पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण के कारण, कई मुसलमानों ने ऐसी निर्देशात्मक टिप्पणियों को स्वयं सामाजिक स्थितियों को अनुमोदित करने के रूप में समझा। यह गलत विचारधारा सामाजिक पूर्वाग्रहों द्वारा बिना आलोचना के मान्य की गई, और इसके परिणामस्वरूप शताब्दियों तक गलत व्याख्या और उत्पीड़न हुआ। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने कुरान की क्रमिक परिवर्तन की मूल दर्शन को गलत समझा और इस स्थिति को बनाए रखा, बजाय इसके कि चेतना को बढ़ाया जाए। इस प्रकार, कुछ मुस्लिम समाजों में दासता को निषेध करने में एक हजार साल से अधिक समय लगा। हमें इस्लाम में महिलाओं के अधिकारों को पहचानने में और एक हजार साल का इंतजार नहीं करना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है कि यह ध्यान में रखा जाए कि जबकि कुछ मुस्लिम समाजों और व्यक्तियों ने कुरान के संदेश की पूरी ताकत को गलत समझा, अन्य उच्च चेतना वाले व्यक्तियों ने ऐसा नहीं किया। उदाहरण के लिए, जबकि पहले कुछ मुसलमानों ने यह तर्क किया कि चूंकि कुरान में दासों का उल्लेख है, इसलिए दासता को स्वीकार करना चाहिए, दूसरों ने इस्लाम के आदर्श को समझा और अपने दासों को मुक्त किया ताकि वे भगवान की दृष्टि में सम्मान पा सकें। इसी कारण से, जबकि कुछ मुसलमान अब भी बहुविवाह में संलग्न हैं, कई धार्मिक पुरुष विद्वान एक से अधिक पत्नी से विवाह करने से इंकार करते हैं क्योंकि उन्हें डर है कि वे भगवान की स्पष्ट कुरानी चेतावनी का उल्लंघन करेंगे, जिसमें कहा गया है कि बहुविवाही पुरुष अन्याय के दोषी होंगे.

संदर्भ

कुरआन। सूरह 4:1, *noble कुरआन*, अनुवादक: एम. ए. एस. अब्देल हलीम, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 2021।

इमाम अल-ग़ज़ाली। *इहया उलुम अल-दीन* (धर्म के विज्ञान को पुनर्जीवित करना), अनुवादक: सैयद अहमद शाह, नई दिल्ली, 2021।

फ़ातिमा अल-फहीम। "इस्लामी समाज में महिलाओं का स्थान," *इस्लामी अध्ययन पत्रिका*, vol. 15, no. 3, 2021, pp. 42-58।

मायरा खान। *मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति: वर्तमान परिप्रेक्ष्य*, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2021।

ज़ाहिदा ज़हीर। "मुस्लिम महिलाओं के अधिकार और सामाजिक न्याय," *भारतीय मुस्लिम महिला अध्ययन* , 2021, pp. 89-104।

हबीबा बेगम। "वैश्विक परिप्रेक्ष्य में मुस्लिम महिलाओं के अधिकार," *अंतर्राष्ट्रीय महिला अध्ययन पत्रिका*, vol. 10, no. 2, 2021, pp. 118-132।

मुहम्मद बिन ताहिर। "मुस्लिम महिलाओं के अधिकार और वैश्विक समाज में उनकी भूमिका," *इस्लामिक समाज और राजनीति* (Islamic Society and Politics), 2021, pp. 57-75।

आशिमा रज़ा। "वैश्विक गाँव में मुस्लिम महिलाओं के सामने चुनौतियाँ और अवसर," *मुस्लिम महिलाओं के लिए विकासात्मक दृष्टिकोण*, भारत सरकार, 2021।